Subject :- Sociology Date :- 13/05/2020
Class :- D-I (H) Paper :- 2nd
Topic :- हरबर्ट स्पेन्सर के सावयव एकरूपता सिद्धान्त
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari college, Darbhanga

सावयव एकरूपता सिद्धान्त Online Study Material No :- 76

सुप्रसिद्ध समाज विचारक Herbert Spencer का जन्म इंग्लैण्ड के डर्बी नामक स्थान पर एक निर्धन परिवार में 27 अप्रैल 1830 को हुआ था। माता - पिता की निर्धनता के कारण उन्हे विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त नही हो सका। उन्होने हमेशा कानून तथा नियमों का विरोध किया। 12 वर्ष की अवस्था से ही इनके विचार क्रांतिकारी हो गये थे। Spencer के बारे में कहा जाता है कि उनके पास दिमाग तो था लेकिन दिल नही, इसलिए वे अन्त तक अविवाहित रहे।

Spencer की रुचि बचपन से ही जीवशास्त्र में थी। इसके अतिरिक्त यंत्रशास्त्र में भी इनकी अभिरुचि थी। जिसके परिणाम-स्वरूप 17 वर्ष की अवस्था अर्थात 1847 में वे लंदन और बर्मिंघम रेल मार्ग के प्रमुख इंजीनियर बन गये। उन्होने 1850 से समाज-शास्त्र के लिए अपनी प्रथम पुस्तक 'Social Status' लिखी। 1868 के बाद Spencer एक प्रमुख सामाजिक विचारक के रूप में विख्यात हो गये। इनकी मृत्यु 1902 ई० में हो गयी।

Herbert Spencer की सर्वाधिक ख्याति उनके द्वारा प्रतिपादित समाज की प्राणी-सामयवी अवधारणा के कारण है। उन्होने प्राणीशास्त्रीय सिद्धान्त को स्पष्ट रूप से समाज पर लागू किया। उन्होने इस सिद्धान्त के अन्तर्गत समाज का विश्लेषण एक सावयव के रूप में किया है। उन्होने इस सिद्धान्त के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि समाज और सावयव में समानताएँ होती है जो इस प्रकार है :-

1. जड़ पदार्थो से अलग :- समाज और सावयव में पहली समानता यह है कि दोनों ही जड़ पदार्थो से पृथक है। जड़ पदार्थो में वृद्धि नही होती जबकि समाज और सावयव में धीरे-धीरे विकास होता है।
2. अंगों में अन्तः सम्बन्ध और आत्मनिर्भरता :- जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंग अलग-अलग होते है फिर भी उनमें पारस्परिक निर्भरता होती है। सम्पूर्ण शरीर की समुचित व्यवस्था उसके विभिन्न अंगों की व्यवस्था पर आश्रित होती है। ठीक इसी प्रकार सामाजिक व्यवस्था भी समाज के व्यवस्था पर निर्भर होती है। एक अंग का कार्य दूसरे को प्रभावित करता है।

Scanned with CamScanner

3. इकाईयों से निर्माण :- जिस प्रकार शरीर का निर्माण इसकी विभिन्न इकाईयों से ही संभव हो जाता है, ठीक उसी प्रकार समाज का निर्माण भी उसकी विभिन्न इकाईयों से होता है।

4. विकास के साथ जटिलता :- जिस प्रकार शरीर सावयव के विकास के साथ उसके आँख, नाक, कान आदि का विकास होता है तथा वे स्वच्छन्द रूप से काम करने लगते हैं ठीक उसी प्रकार समाज के विकास के साथ उसके विभिन्न अंगों का विकास स्वतः होता जाता है तथा उनमें जटिलताएँ आती-जाती है।

5. विनाश क्रम :- शरीर के किसी अंग के शरीर से अलग हो जाने पर जिस प्रकार शरीर का विनाश नहीं होता उसी प्रकार समाज की किसी इकाई के समाज से पृथक हो जाने पर समाज का विनाश नहीं होता है। उदाहरणार्थ - किसी व्यक्ति का किसी दुर्घटना में हाथ-पैर कट-फट जाता है तो वह जीवित रहता है। उसका शरीर नहीं मरता। उसी प्रकार किसी व्यक्ति के मर जाने से समाज का नाश नहीं होता बल्कि वह चलता ही रहता है।

उपरोक्त समानताओं के साथ-साथ समाज और सावयव में निम्नांकित विभिन्नतायें भी है :-

प्रथम असमानता यह है कि शरीर के विभिन्न अंग एक-दूसरे से इस प्रकार सम्बन्धित रहते हैं कि इनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। इसके विपरित समाज के विभिन्न अंगों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है। वे अपने ढंग से अलग-अलग सोचते, कार्य करते तथा निर्णय लेते हैं।

दूसरी असमानता यह है कि शरीर का विकास प्राकृतिक नियम के अनुसार होता है। शरीर के अवयव प्राकृतिक नियम के अनुसार स्वतः विकसित होते हैं। इसके विपरीत समाज का विकास प्राकृतिक नियमानुसार न होकर व्यक्ति की चिन्तन शक्ति के अनुसार होता है।

तीसरी असमानता यह है कि शरीर अंगों के लिए नहीं बल्कि अंग शरीर के लिए होता है। इसके विपरीत व्यक्ति समाज के लिए नहीं बल्कि समाज व्यक्ति के लिए होता है।

चौथी असमानता यह है कि मानव शरीर के अंग सम्पूर्ण शरीर को बाधा पहुँचाये बिना एक जगह से दूसरी जगह भ्रमण नहीं कर सकते जबकि व्यक्ति समाज को बाधा पहुँचाये बिना एक जगह से दूसरी जगह का भ्रमण कर सकते हैं।

Herbert Spencer के समाज सावयव सिद्धान्त की आलोचकों ने कटु आलोचना की है। इनके सिद्धान्त का सबसे बड़ा दोष यह

Scanned with CamScanner

है कि इन्होंने जितना अधिक समानता का वर्णन किया है उतना विभिन्नता का नही। स्पेन्सर ने जीवित शरीर की भाँति ही समाज को भी माना है। जबकि वास्तविकता यह है कि शरीर का स्वरूप भौतिक होता है तथा समाज का स्वरूप मानवीय कल्पना पर आधारित होता है। Sorokin ने Spencer द्वारा प्रतिपादित समाज के सावयव सिद्धान्त को अवैज्ञानिक कहा है तथा समाजशास्त्र के विकास में इसे बाधक माना है। प्रो० बार्कर ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुये कहा है कि स्पेन्सर का प्राणीशास्त्र व व्यक्तिवाद दो परस्पर विरोधी घोड़ों के समान है, जो गाड़ी को विरोधी दिशाओं में खींचते है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U